प्रपत्तिस्तवः

जय राम हरे सुखधाम हरे
जगदीश हरे जगदीश हरे।।
जय कृष्ण हरे घनश्याम हरे
जगदीश हरे जगदीश हरे।।

भूमितले मम कोऽपि न केशव
मामव हे भवसिन्धुतरे।।1।।
जगदीश हरे जगदीश हे, जय राम ...

हे भवभावन विश्वविभावन
पावन लाहि करं स्वकरे।।2।।
जगदीश हरे जगदीश हरे, जय राम ...

माधव मोदय पोषय तोषय
लोकपथे बहुकष्टभरे ।।3।।
जगदीश हरे जगदीश हरे , जय राम ...

श्रीकरुणेश दयस्व सदा मयि
कुत्सितकल्मषधूरधरे।।4।।
जगदीश हरे जगदीश हरे,जय राम...

त्वत्कृपयेह विना क्व गतिर्भुवि
देहि दयां मयि दीननरे ।।5।।
जगदीश हरे जगदीश हरे, जय राम ...
जीवनसंगतिरत्र सदा मम
अस्तु नरे परमेशपरे ।।6।।
जगदीश हरे जगदीश हरे,जय राम ...

राधा नटति

राधा नटति रतिधाका स्वदाका ,
राधा नटति रतिधाका ।।
नन्दनन्दनानन्दितवदना
भुवने स्थापितनाका ।।1।। स्वदाका, राधा नटति...

हासोल्लासविभासितरदना
तोषितरसभिक्षाका।।2।। स्वदाका,राधा नटति...

स्वानिर्वचनीयच्छविनिचयैः
मूकीकृतजल्पाका।।3।। स्वदाका ,राधा नटति...

कमनीयाद्भुत-दुर्लभतमनिज-
भाभापितपितुभाका।।4।। स्वदाका,राधा नटति...

प्रेमसुधारसमीरसमीरण-
मोदितमोदपताका।।5।। स्वदाका ,राधा नटति...

मधुरमनोहरकरकमलैरिह
वितरितनवरसपाका।।6।। स्वदाका,राधा नटति...

प्रभुपदपद्मरसभ्रमरेभ्यः
पायितपरमसुधाका।।7।। स्वदाका,राधा नटति...

होलाखेलनचाकचिक्यचय-
मोहितमृदुलमलाका।।8।। स्वदाका,राधा नटति...

श्यामसहिततेवनपरिपूरित-
परमानन्दतडाका।।9।। स्वदाका, राधा नटति...

रमणारमणलवणखेलनतो
दीप्तो दिवसो राका।।10।। स्वदाका, राधा नटति...

-डॉ. शैलेश कुमार तिवारी
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार